उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान,भोपाल

सृजन संदेश

2021 - 22

हिंदी विभाग

अश्विन/कार्तिक

संदेश

डॉ. प्रज्ञेश कुमार अग्रवाल
संचालक

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि संस्थान के हिन्दी विभाग द्वारा वार्षिक 'न्यूज़ लेटर' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस न्यूज़ लेटर में हिन्दी विभाग द्वारा सम्पूर्ण सत्र में की गई विभिन्न गतिविधियों का संकलन होगा एवं साथ ही यह विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को भी समाचारों की शैली में प्रदर्शित करेगा। यह निश्चित ही विभाग का अभिनव प्रयास है एवं इसके लिये प्रकाशन से संबंधित समस्त विद्यार्थी एवं शिक्षक साधुवाद के पात्र हैं। अपने सहपाठी विद्यार्थियों एवं साथी शिक्षकों द्वारा संपादित उल्लेखनीय गतिविधियों की जानकारी से अन्य विद्यार्थी एवं शिक्षक भी प्रोत्साहित होते हैं। सांस्कृतिक गतिविधियों, साहित्यक गतिविधियों एवं अन्य सभी महत्वपूर्ण विधाओं में संस्थान के विद्यार्थी सदैव उत्कृष्ट प्रदर्शन करते आये हैं। इसी श्रृंखला में विगत शैक्षणिक सत्र में भी विद्यार्थियों ने उच्च कोटि का प्रदर्शन कर विभिन्न क्षेत्रों में संस्थान को गौरवान्वित किया है।

आशा है कि यह संकलन विभिन्न विधाओं में संस्थान की स्वर्णिम सफलताओं को प्रदर्शित करने में सहायक होगा एवं संस्थान के एक महत्वपूर्ण प्रकाशन के रूप में भविष्य में उपयोगी सिद्ध होता रहेगा।

विभागीय शिक्षकों, संपादक मंडल एवं समस्त संबंधित विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

संपादकीय

डॉ. संध्या प्रसाद
विभागाध्यक्ष
हिंदी विभाग

"सृजन संदेश" न्यूज़ लेटर के रूप में विगतवर्षो से प्रकाशित होता आ रहा है। जिसमें विभाग द्वार वार्षिक प्रमुख साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के संकलन के साथ साथ विद्यार्थियों की छिपी हुई रचनात्मक प्रतिभा को स्थान दिया जाता है।

सृजन संदेश का मुख्य उद्देश्य ही रचनात्मक रूप से विद्यार्थियों को सशक्त करना। इस वर्ष के सृजन संदेश को मानवीय संवेदनाओं की कवयित्री **महादेवी वर्मा** की पुण्यतिथि पर केंद्रित कर उन्हें श्रद्धापूर्वक याद किया जा रहा है। साथ ही संस्थान की निरंतर होती यज्ञ स्वरूप सफलताओं में आहूति स्वरूप हिंदी विभाग का यह योगदान अर्पित करते हैं। आदरणीय संचालक महोदय डॉ. प्रज्ञेश कुमार अग्रवाल जी का हार्दिक आभार एवं विभाग के साथी शिक्षको और सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं।

विभागीय सदस्य

विभागाध्यक्ष - डॉ. संध्या प्रसाद
वरिष्ठ प्राध्यापक - डॉ. आरती दुबे
वरिष्ठ प्राध्यापक - डॉ. आरती श्रीवास्तव
प्राध्यापक - डॉ. संदीपा कालभोर
प्राध्यापक - डॉ. रामानुज रघुवंशी
प्राध्यापक - डॉ. एकता गोस्वामी
प्राध्यापक - श्री अरूण सगविया
प्राध्यापक - डॉ. शिरोमणि चौहान

पुण्यतिथि **विशेष**

महादेवी वर्मा

ऐसा तेरा लोक, वेदना नहीं
,नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं
जिसने जाना मिटने का स्वाद!

क्या अमरों का लोक मिलेगा
तेरी करुणा का उपहार
रहने दो हे देव! अरे
यह मेरे मिटने क अधिकार!

अंतर राष्ट्रीय वेबिनर....

अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान के अंतर्गत **दो दिवसीय "प्रवासी साहित्य"** का आयोजन 10/03/22 और 11/03/22 को किया गया। जिसमें विश्व के विभिन्न देशों में निवासरत भारतीय मूल के लेखक, कवि और विद्वानों से संवाद स्थापित किया गया साथ ही वर्तमान परिदृश्य में प्रवासी साहित्य का क्या महत्व है जैसे विषयों से विद्यार्थियों को परिचित कराना था।

प्रमुख आमंत्रित प्रवासी विद्वान -

माननीय शरद आलोक (नार्वे)
मा. सुनीता पाहुजा मॉरिशियस
मा. दीपक पाण्डेय दिल्ली
मा.राजेश श्रीवास्तव भोपाल७
मा.तेजेंदर शर्मा यू.के.
मा. प्रणु शुक्ला जयपुर
मा.केशव कुमार (आगरा)
मा. ज्योति शर्मा रोमानिया/ दिल्ली
मा. उमेश सिंह (भोपाल)
मा. आनंद सिंह (गाजीपुर)
मा. हरीश अरोरा (दिल्ली)
मा. के. के.शर्मा (उदयपुर)
मा. शैलेंद्र शर्मा (उज्जैन)

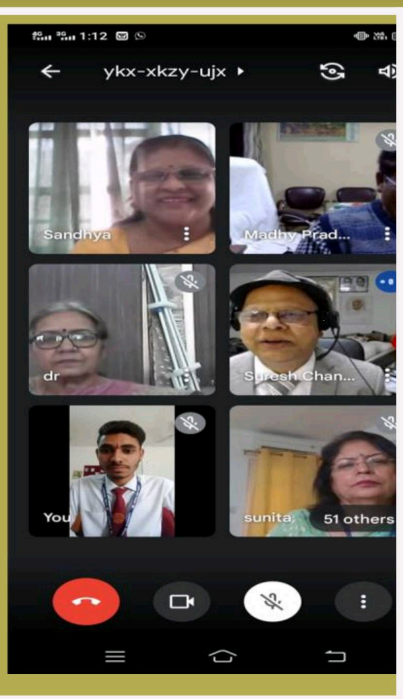

विशेष व्याख्यान

विभाग द्वारा विशेष व्याख्यान के अंतर्गत ऑनलाइन माध्यम से 25 जनवरी 2022 को "साहित्य एवं मानवीय मूल्य" विषय पर आयोजित किया गया था। जिसमें आमंत्रित अतिथि और वक्ता प्रो. आनंद वर्धन शर्मा विजिटिंग प्रोफेसर ICCR हिंदी पीठ, भारत विद्या विभाग सोफिया विश्वविद्यालय सोफिया, बुल्गेरिया। व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को साहित्य में निहित संवेदना से साक्षात्कार करवाना था।

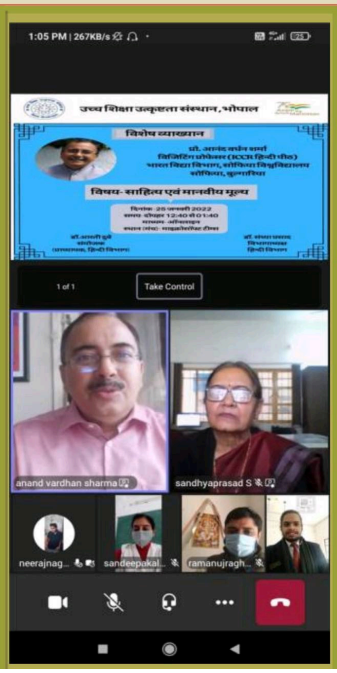

अध्यनमंडल की बैठक

शैक्षणिक पाठ्यक्रम के निर्धारण के पश्चात विश्वविद्यालय से प्रेषित अध्यनमंडल द्वारा 2021-22 पाठ्यक्रम का अवलोकन और अध्यन हेतु अध्यनमंडल की बैठक दिनांक 21/01/2021 को सम्पन्न की गई।

व्याख्यान माला

विभाग द्वारा व्याख्यान माला के अंतर्गत सत्र 2021-22 में विभिन्न विषयों पर ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही माध्यम से देश के और प्रवासी विद्वानों जो की विषय के गंभीर पाठक और साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहें है उनको आमंत्रित किया। पाठयक्रम के अनुसार प्रमुख और महत्वपूर्ण विषयों को रेखांकित करते हुए व्याख्यान और वेबिनार का आयोजन किया गया।

प्रमुख विषय और आमंत्रित अतिथि वक्ता :-

कथा साहित्य - डॉ. धनश्याम भारती
संस्मरण/रेखाचित्र - डॉ. सुधीर चौधरी
भक्तिकाल - डॉ. यशवंत सिंह रघुवंशी
प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. के.जी. मिश्र
भक्तिकाल/ रीतिकाल - डॉ. यशवंत सिंह रघुवंशी
ध्वनि सिद्धांत - डॉ. लक्ष्मीनारायण पांडेय
ई गवर्नेंस और हिंदी में कंप्यूटरिंग - डॉ. सुधीर शर्मा
रस और काव्य सिद्धांत - डॉ. मोहिनी अरोरा
एक कंठ विषपायी - डॉ. प्रतिभा सिंह
आलोचना की रचना और आधुनिक आलोचना - डॉ. धनंजय वर्मा

नाट्य प्रस्तुतिकरण

पाठ्यक्रम में सम्मिलित "अंधा युग" काव्यानाटक का विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में 04/10/21 को मंचन किया गया।

धर्मवीर भारती द्वारा रचित इस काव्य नाटक में निहित भाव और संदेश से सभी विद्यार्थी को परिचित कराना और शिक्षण को रचनात्मक बनाना था। अंधा युग काव्य नाटक की वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता और मानवीय मूल्यों के उत्तरदायित्व का बोध ही समाज को एक सुदृढ़ सभ्यता की ओर प्रेषित करता है।

भूतपूर्व छात्र आभासीय संवाद

हमारे विभाग द्वारा दिनांक 21/03/2022 को संस्थान के संचालक डॉ. प्रज्ञेश कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन में भूतपूर्व छात्र संगठन के संयोजक डॉ. मुकेश जैन, आई क्यू ए सी प्रभारी डॉ. अनुज हुंडैत, डॉ. कल्पना मलिक, डॉ. रमन श्रीवास्तव के सहयोग से विभागाध्यक्ष डॉ. संध्याप्रसाद ने भूतपूर्व छात्रों से संवाद आयोजित किया। विभाग और संस्थान की उन्नत होती संरचना एवं विकास हेतु उनके सुझावों को आमंत्रित किया। जहां भूतपूर्व छात्रों ने अपने अनुभव सांझा किए तथा वर्तमान में और भविष्य में संस्थान के हितों के लिए कटिबद्ध रहने का निश्चय किया।

महोत्सव तरंग

संस्थान के वार्षिक सांस्कृतिक और कलात्मक महोत्सव तरंग में काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें साहित्य से संबंधित सभी कार्यों के लिए हिंदी और अंग्रेजी विभाग ने समन्वयपूर्ण कार्य किया। इसी कड़ी में काव्यपाठ प्रतियोगिता में हिंदी काव्य पाठ के विजेताओं में प्रथम स्थान सिद्धांत शर्मा, द्वितीय प्रियम आर्य। अंग्रेजी काव्यपाठ में प्रथम स्थान वाणी गुरु और द्वितीय प्रीति निगम ने प्राप्त किया।

दुखद

हमारे विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष, कुशल प्राध्यापक, मिलनशील व्यक्तित्व की धनी और समय समय पर हम सभी का मार्गदर्शन करने वाली डॉ. मधु जैन मैडम का कोविड महामारी में 19 जून 2020 को स्वर्गवास हो गया। यह विभाग के लिए अपूर्ण क्षति है। विभागीय सदस्यों की ओर से डॉ. मधु जैन मैडम को श्रद्धापूर्वक प्रणाम।

सत्र 19-20 में नवंबर में कुल्लू मनाली शैक्षणिक भ्रमण

"दुनिया की बेबसी

आज वक़्त के जिस सन्नाटे से हम सभी गुजर रहे हैं, जहाँ भीतर की अकुलाहट खुद की बेचैनी को छिपाने में असमर्थ जान पड़ रही है, अपनी बेबसी पर हर कोई बेअसर व लाचार नजर आ रहा है, दुनिया की खामोशी है, जो खुद को भीतर से कमजोर कर रही है

वक़्त गुजरता जा रहा है और तकलीफ़ बढ़ ही रही हैं, दुनिया की अजीब दुविधा में हर कोई खुद को फँसता हुआ महसूस कर रहा है ... "निराशा और नाउम्मीदी ने ही जीवन की रोमांचिता को समाप्त कर दिया है"....आज का युवा जिसमे अदम्य साहस, कार्य करने की अद्भूत क्षमता, कर्मठता, और विपरीत परिस्थितियों में भी आशाओं के नवीन राह का सृजन करना बखूबी आता है, वो भी आज खुद से निराश और हताश हुए बैठे हैं.... अजीब है...."कोई साथ बैठा हो, चुपचाप हो और चुप्पी असर न रही हो. ऐसी शामें कभी-कभार ही आती हैं" आज लोगो में वो उमंग और उत्साह नजर नहीं आ रहा है, जो मानव की अद्वितीय पहचान थी, चेहरे की मुस्कुराहट पर वो गंभीरता आ गई है जो यह प्रमाणित करती है कि मानवता सचमुच आज खतरे में है....पूरी दुनिया जिस त्रासदी से ग्रस्त है, उसकी एक छटा की आशंका ही भीतर के सारे मनोभावों को खंडित कर देती है. सुकून की तलाश हर कोई चाहता है, पर जब वह भीतर से ही व्याकुलता लाती है तो सारी बाते धूमिल हो जाती है..."कभी-कभी मज़े-मज़े की बातें ही व जाने कब बेचैनी देने लगती है, इसका पता ही नहीं चलता"....बचपन की ख्वाहिशों को पूरी करने के जद्दोजहद में लगे सभी लोग अपने जीवन की अनुठता ही ऊब रहे है....."वक़्त की अनोखी मार हैं ये, या कुदरत का अजीब कहर, न जाने कब थमेगी, थम जाए तो बेहतर होगा वरना हर कोई होगा में ही परेशान"...उम्मीद इस बात की है कि नाअमीदी ही मिले, लेकिन इतना सोच समझकर चलें तो क्या साक चलें....दुनिया को अब एक नयी शुरूआत करनी होगी, में बदलाव लाना होगा, परिवर्तन की नयार को बहाना होगा...."कभी-कभी एक नयी शुरुआत ही अपनी सारी पुरानी बातों को भुलाने की वजह बनती है"...

[redacted]

भाव शून्य स्नेह रिक्त, हुआ चित्त अश्रु सिक्त
किंतु विचलित गगन, होता तुम बिन जैसे मन।।

अदना सा जो पुष्प समझ, पग की जैसे कोई रज
कुचला दिया उसने हृदय, हो उठा मैं फिर फिर उदय
पर नही गंधयुक्त चंदन, होता तुम बिन जैसे मन।।

-शिवेंद्र मिश्रा

खुद्दार जवानी

खुद्दार जवानी की ताकत जैसे राणा का भाला था
खुद्दार जवानी जिससे मुहम्मद गौरी डर के भागा था
इतिहास के पन्नों पर जो अपने खूँ से लिखी कहानी थी
कोई और नहीं वो भारत की खुद्दार जवानी थी
खुद्दार जवानी जिससे अंग्रेजों का शासन हारा था
खुद्दार जवानी जिसने डायर लंदन जाकर मारा था
देश पे मरने वाले दीवानों की जो दीवानी थी
कोई और नहीं वो भारत की खुद्दार जवानी थी
खुद्दार जवानी ने गोरों की नाक में दम हर बार किया
खुद्दार जवानी जिसने सागर तैर तैर कर पार किया
जिसको भारत माता के आंचल की लाज बचानी थी
कोई और नहीं वो भारत की खुद्दार जवानी थी
भारत मां का दर्द देखकर अपना जीवन भूल गया
छोड़ पेड़ के झूलों को फांसी का झूला झूल गया
एक धमाके से गोरों को याद दिलाई नानी थी
कोई और नहीं वो भारत की खुद्दार जवानी थी
बांध जानेहू मूंछ तानकर गोरों को बर्बाद किया
अमर हो गया मर कर भी वो जीते जी आजाद जिया
गोरों की काली करतूतों पर जिसको आग लगानी थी
कोई और नहीं वो भारत की खुद्दार जवानी थी
सौ गीदड़ के सम्मुख केवल एक शेरनी भारी थी
गोरों को धूल चटाई जिसने वो भारत की नारी थी
बांध पुत्र को पीठ पे लड़ लेती है, धन्य वो रानी थी
कोई और नहीं वो भारत की खुद्दार जवानी थी
एक युवा का साहस सारी दुनिया भर में छाया था
भारत के स्वर्णिम गौरव को अमरीका में गया था
भारत से बेहतर कोई नहीं जिसको ये गूंज सुनानी थी
कोई और नहीं वो भारत की खुद्दार जवानी थी
अरे जवानों मेरी मानो देशभक्ति को ठानो तुम
लैला मजनू के किस्से छोड़ो बलिदानों को जानो तुम
अरे जवानों बलिदानों की लाज बचा कर रख लेना
उनने अपना कल खोया तुम आज बचा कर रख लेना
आने वाली पीढ़ी से तुम गलत कहानी मत कहना
इस खुद्दार जवानी को गद्दार जवानी मत कहना
यही जवानी भारत की तकदीर बदल भी सकती है
यही जवानी दुनिया की तस्वीर बदल भी सकती है
अगर जवानों हम सब मिलकर अपना धर्म निभायेंगे
वो दिन दूर नहीं है जब हम विश्वगुरु बन जायेंग

द्वारा - प्रियम आर्य

प्रकाशक : हिंदी विभाग उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल